# श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्

# सत्रान्तपरीक्षा एप्रिल – २०१६

| | | |
|---|---|---|
| कक्षा – शास्त्री-१ (SEM-2) | **प्रश्नपत्रम् – ८** | गुणाः - ७० |
| विषयः – वास्तुशास्त्रम् | **CE-1.2.4** | समयः - ११ तः २ |
| दिनाङ्कः – २६/४/२०१६ | सन्दर्भग्रन्थः – वास्तुरत्नावली, शिल्पशास्त्रम् | |

| | | |
|---|---|---|
| | **प्रथमान्वितिः -१** | |
| **प्रश्नः -१** | **द्वयोः सान्वयं व्याख्यां कुरु ।** | ०८ |
| | (१) गृध्रः कङ्कः कपोतश्च उलूकः श्येन एव च ।<br>चिल्लश्च चर्मविलश्च मासः पाण्डुर एव च ॥<br>(२) गृहारम्भे दिने मासे धिष्णे वारे विशेद् गृहम् ।<br>विशेत्सौम्यायने हर्म्यं तृणागारं तु सर्वदा ॥<br>(३) अजैकपादहिर्बुध्न्य शक्रमित्रानिलान्तकैः ।<br>समन्दैर्मन्दवारे च रक्षो भूतयुतं गृहं ॥ | |
| **प्रश्नः -२** | **एकस्मिन् विषये विस्तारेण वर्णनं कुरु ।** | ०८ |
| | (१) द्वारचक्रविचारः विशदं वर्णयत ।<br>(२) वास्तुपूजाविधिः संक्षेपेण निरूपयत । | |
| **प्रश्नः -३** | **एकमेव टिप्पणीं लिखत ।** | ०२ |
| | (१) पुरभेदविचारः ।<br>(२) गृहे गृध्रादिपतने विचारः । | |
| **प्रश्नः - ४** | **द्वयोः लघूत्तराणि लिखत ।** | ०२ |
| | (१) दुर्गाणि कति ? के च ते ?<br>(२) गृहप्रवेशः कदा करणीयः ?<br>(३) शिल्पीलक्षणं लिखत ।<br>(४) शान्तिपाठं लिखत । | |
| | **द्वितीयान्वितिः - २** | |
| **प्रश्नः -५** | **द्वयोः सान्वयं व्याख्यां कुर्वन्तु ।** | ०८ |
| | (१) एकोऽपि नूनं परभागवर्तीं विपत्स्मरस्थः अवरोऽब्दमध्ये ।<br>करोति गेहं परहस्तयातं स्याद्दुर्बलश्चेदिह वर्णनाथः ॥<br>(२) सूत्रे विस्तीर्यमाणे तु पन्नगो यदि दृश्यते ।<br>अचिरेणैव कालेन सर्पेण निहतो ध्रुवम् ॥<br>(३) नत्वा श्रीकालिकादेवीं गुरुश्च ज्ञानकारणम् ।<br>माता पित्रोः पदाम्भोजं विधिज्ञानं लिखाम्यहम् ॥ | |
| **प्रश्नः -६** | **एकस्मिन् विषये विस्तारेण वर्णनं लिखतु ।** | ०८ |
| | (१) वास्तुभूपरीक्षणविधिः विशदं विवेचयत । | |

| | | |
|---|---|---|
| | (२) चतुषष्टिपदे चतुर्भुजे देवानां न्यासचक्रं निरूपयत । | |
| **प्रश्नः -७** | **द्वयोः टिप्पणीं लिखत ।** | ०४ |
| | (१) गृहप्रवेशविचारः ।<br>(२) एकाशीतिवास्तुपदमण्डलम् ।<br>(३) आयविचारः ।<br>(४) सूत्रलक्षणविधिः । | |
| **प्रश्नः -८** | **अधोलिखितयोः पञ्चप्रश्नानां लघूत्तराणि लिखत ।** | ०५ |
| | (१) वास्तुपदमण्डले मध्ये कः देवः भवति ?<br>(२) अग्निकोणे कः देवः स्थापनीयम् ?<br>(३) पूजाविध्यां कति प्रकारान् स्नानं भवति ?<br>(४) गृहप्रवेशः पूर्वे किं कर्त्तव्यम् ?<br>(५) राशयः कति ? के च ते ?<br>(६) आयनामानि लिखतु ।<br>(७) वर्धकी लक्षणं लिखत । | |
| | **तृतीयान्वितिः - ३** | |
| **प्रश्नः -९** | **द्वयोः सान्वयं व्याख्या कार्या ।** | ०८ |
| | (१) ब्रह्मजातिं यदा भूमिं लोभादिच्छन्ति क्षत्रियाः ।<br>सर्वे ते निधनं यान्ति शैला वज्रहता इव ॥<br>(२) दुर्गोदयं नन्दकर प्रमाणं लिथ्यासमं सप्तदशैव केचित् ।<br>एकोनविंशत् पृथुता त्रयाणां दिक्पाल सूर्याष्टकरं वदन्ति ।<br>(३) वास्तोष्पतिम्महादेवं सर्वसिद्धि विधायकम् ।<br>शान्ति कर्तारमीशानं तं वास्तुं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥ | |
| **प्रश्नः -१०** | **एकस्मिन् विषये विस्तारेण वर्णनं कुरु ।** | ०८ |
| | (१) भावस्थग्रहाणां फलं विस्तारेण वर्णनं कुरु ।<br>(२) गृहप्रवेशविधिः विशदं वर्णयत । | |
| **प्रश्नः -११** | **द्वयोः टिप्पणीं लिखत ।** | ०४ |
| | (१) ग्रामभेदः विचारः (२) दुर्गनामविचारः<br>(३) व्ययविचारः (४) वास्तुनामलक्षणम् | |
| **प्रश्नः -१२** | **अधोलिखितयो पञ्चप्रश्नानां लघूत्तराणि लिखत ।** | ०५ |
| | (१) शिल्पशास्त्रं केन रचितम् ?<br>(२) व्ययनामानि लिखतु ।<br>(३) शिल्पशास्त्रग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति ?<br>(४) अक्षतात् वास्तुपूजायां उपयोगं भवति न वा ?<br>(५) नक्षत्राणि कति ?<br>(६) सिंह आप कुत्र प्रयुज्यते ? | |

***